Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com/ Vol.03, No.1, August, 2024

निषाद : आदिमानव की उत्पत्ति का इतिहास

डॉ० अभिषेक त्रिपाठी, सहायक आचार्य (शोध निर्देशक)
दिनेश चन्द्र(शोधार्थी)
समाजशास्त्र विभाग, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

****

शोध सार

निषादों का इतिहास प्राचीन मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह धरती पर मानव बस्तियों के निर्माण, आवास की स्थापना और प्रारंभिक सभ्यताओं की उन्नति का प्रतीक है। सिन्धु घाटी सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त नरकंकालों और साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि निषाद समुदाय वैदिक काल तक एक सशक्त और समृद्ध संस्कृति का हिस्सा थे। निषाद संस्कृति ने वैदिक साहित्य, महाकाव्यों, और पुराणों के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में निषादों का उल्लेख आदर्श, वीरता और सहयोग के प्रतीक के रूप में किया गया है। महाभारत काल में निषाद राजाओं का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है, जिसमें निषाद राजा नल और एकलव्य जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों का वर्णन है। निषाद संस्कृति की जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापक भूभागों में फैली हुई थीं, जिसमें हिमालय की श्रृंखलाओं से लेकर राजस्थान और पंजाब तक निषादों का विस्तार हुआ। निषाद पर्वत और निषाद भूमि का उल्लेख भी महाभारत में मिलता है, जो उनके भूगोल और निवास स्थानों को दर्शाता है। निषादों की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान सदियों से विकसित होती रही, और वे भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक बने। निषाद शब्द की व्युत्पत्ति और उसका प्रयोग विभिन्न कालों में संगीत, यज्ञ, और समाज के विभिन्न संदर्भों में होता रहा है। निषादों का योगदान न केवल प्राचीन भारत की सांस्कृतिक धरोहर में महत्वपूर्ण है, बल्कि उनकी गणना प्रणाली और भाषा ने भी विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

बीज शब्द : *निषाद, इतिहास, मानव सभ्यता, संस्कृति, सिन्धु घाटी सभ्यता*

****

निषादों का इतिहास धरती पर मनुष्यों के बसने, शनैः शनैः आवास बनाकर रहने तथा आदि संस्कृति और प्राचीन सभ्यता का प्रारम्भिक इतिहास है।

सिन्धु सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त नरकंकालों के आधार पर निषाद लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है तो निश्चित रूप से कहा जा हो सकता है कि वैदिक काल तक निषाद संस्कृति पूर्ण वैभव में विकसित चुकी थी। आदि ग्रन्थों के सृजन में निषाद संस्कृति ही प्रेरणा सूत्र रही है। सम्भावित रूप में वेदों का रचनाकाल (3000-800 ई०पू०), उपनिषदों का रचनाकाल (800-500 ई०पू०), महाकाव्य रचनाकाल (600 ई०पू०), रामायण तथा महाभारत प्रमुख महाकाव्य माने गये हैं। इसके अतिरिक्त पुराण, स्मृतियाँ, संहितायें, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि की रचना हुई। ब्राह्मण तथा उपनिषद ग्रन्थों में निषाद शब्द का प्रयोग राष्ट्र के लिये प्रयुक्त हुआ है। बाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में ही जो श्लोक लिखे गये हैं उसमें निषाद शब्द का प्रयोग हुआ है और उसका अर्थ आदर्श का प्रतीक है-

तस्मातु मिथुनादेक पुनासं पापनिश्चयः।

जघान वैरनिलयो निषादस्तस्य पश्चतः। (बालकाण्ड सर्ग 2 / 10)

मासी निजाइ प्रतिष्ठां त्वमयमः शाश्वतीः समाः।

यत् क्रौंच मिथुनादेक क्रौंच काममोहितम्। (बा0का0 2/15)

महाकाव्य काल में भी निषादों का बहुत ही सम्मानजनक स्थान था। ऐसे ही एक निषाद राजा के एक प्रसंग में निम्नवत वर्णन किया गया है -

यथारोह तेजस्वी स्वयं लक्ष्मणपूर्वजः।

शतो निषादांधिपतिगृही ज्ञातीन चोदयत्।।11।।

(बाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड 56/21)

गंगा के उत्तरी तट पर निषादराज गुह अयोध्या के सूर्यवंशी राजा राम व दशरथ के मित्र थे, जिन्होंने वन गमन के समय अपनी मित्रता का परिचय दिया था।

निषाद देश

महाभारत के इस युद्ध में प्रत्यक्ष रूप से कौरवों का साथ देने वाले निषाद वंश का नाम आया है। महाभारत में निषाद राजाओं का वर्णन एक या दो का नहीं अपितु निषाद राजाओं का विवरण देखने को मिलता है। निषाद राजा वीरसेन के पुत्र नल की कहानी पाण्डवों का विपत्ति के समय धैर्य रखने के लिये सुनाई गई है। निषाद राजा हिरण्यधनु के पुत्र एकलव्य, महाभारत कालीन राजा का प्रसंग जोड़ना भी रोचक है। हिन्दी महाकाव्य सिद्धान्त और मूल्यांकन में देवी प्रसाद गुरु लिखते हैं - "एकलव्य निषाद राजा हिरण्यधनु का पुत्र था। उसके चरित्र में निषाद जाति की वीरता, विनय, सेवा भक्ति आदि विशेषतायें सहज रूप में पायी गई हैं। एकलव्य के पुत्र निषादराजन का भी नाम महाभारत (2472) में मिलता है। एकलव्य का एक निषाद राजकुमार का वर्णन पाण्डवों द्वारा संदेश वाहक अथवा दूत के रूप में भेजने के प्रसंग में प्रयोग किया गया है। जनमेजय के ज्येष्ठ पुत्र का नाम भी निषाद आया है। (1.64, 345) कौरवों के पक्ष में लड़ने वाले निषाद राजा धृष्टद्युम्न भी वीरगति को प्राप्त हुये थे, इसके अतिरिक्त महाभारत में अनेक स्थानों पर निषादाधिपति, निषादराजेन्द्र, निषादाधीश्वर आदि विशेषणों का उल्लेख मिलता है। एक अन्य प्रसंग में किसी निषादी (निषाद पत्नी) का भी लाच्छागृह में जलने का उल्लेख मिलता है। (379, 5625, 5825, 5862-ब) इसके अतिरिक्त महाभारत में सैकड़ों स्थानों पर निषाद शब्द आया है। निषाद पर्वत, निषाद राष्ट्र, निषाद भूमि एवं निषाद जाति के लिये इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

निषाद पर्वत

'हिमवान, हेमकुटस्र्चा, निशाघ और नागोत्तम' (भीष्म पर्व 6, 4)

महाभारत के वर्णन के अनुसार हेमकूट पर्वत के उत्तर की ओर सहस्त्रों योजन तक निषाद पर्वत की श्रेणी पूर्व पश्चिम समुद्र तक फैली हुई थी। श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य का अनुमान है कि यह पर्वत वर्तमान अल्टाई पर्वत श्रेणी का है, प्राचीन भारतीय नाम है। हेमकूट और निषाद पर्वत के बीच का भाग हरिवर्ष कहा गया है। महाभारत के वर्णन में निषाद पर्वत पर नागजाति का निवास माना गया है उपनांश्चनिषधे गोकर्ण च तपोवनन् भीष्म पर्द महाभारत के अनुसार निषाद पर्वत के उत्तर में मेरू पर्वत है- (सभा पर्व)

निषाद भूमि

निषाद भूमि योश्रगं पर्वत प्रदर तथा सरसैवा जायद श्रीमान् श्रेणिमंत च पार्थिवम् (महाभारत वन पर्व 31.5) अर्थात सहदेव ने गोश्रृंग को जीतकर राजा श्रेणिमान को शीघ्र ही हरा दिया। उल्लेख हुआ है कि जिसे निषाद भूमि या निषाद प्रदेश उत्तरी राजस्थान के पार्श्ववर्तीय प्रदेश को माना जा सकता है।

निषाद राष्ट्र

प्रोफ़सर बुलर के मतानुसार निषाद राष्ट्र की स्थिति दक्षिण पंजाब के हिसार तथा भटनेर के इलाके में थी । (हरियाणा प्रान्त बनने से दक्षिण पंजाब का अर्थ प्रांतों के विभाजन से पूर्व का माना जा सकता है।)

"द्वारे निषाद राष्ट्रस्य येषां दोषात् सरस्वती ।

प्रविष्टा पृथ्वी वीर या निषाद हिमां विदुः"

(महाभारत 3.130.4)

इस उल्लेख से निषाद राष्ट्र की स्थिति राजस्थान के उत्तरी भाग में सिद्ध होती है। यहीं महाभारत में उल्लेखित 'विनशन' तीर्थ स्थित था। शाक क्षत्रिय रुद्दामन के गिरनार - अभिलेख (लगभग 120ई0) में उसके राज्य विस्तार के अन्तर्गत इस प्रदेश की गणना की गयी है।

स्ववीर्यजितानामानुरक्तः प्रकृतीनां सुरराष्ट्र श्वभ्ररु कच्छ सिंधु सोवीर कुकुरपसंत निषादवादीनाम्

निवासियों और निषाद आदि विजातियों पर अपनी दिग्विजय यात्रा में सहदेव ने विजय प्राप्त की थी। (महाभारत 31.661)

निषाद भूमिं गोश्रंग पर्वत प्रवरं तथा तरसैवा जायद् धीमान् श्रेणिमंत्र च पार्थिवम्। महाभारत सभा पर्व 31.511 गोश्रंग को सहदेव ने दक्षिण दिशा को विजय के प्रसंग में जीता था। गोश्रंग पर्वत, प्रसंग से अरावली पहाड़ की श्रेणी का कोई भाग जान पड़ता है। यह निषाद भूमि के निकट था। संभव है यह आबू या अर्बुद के किसी शिखर का नाम हो । कैलाश के उस पार तथा अल्टाई या निषाद पर्वत की ओर हरिवर्ष को माना जा सकता है। इसमें जापान, मंचूरिया, मंगोलिया, उत्तरी तुर्किस्तान, जर्मनी तथा इंग्लैण्ड को अनेकों विद्वानों ने हरिवर्ष के अन्तर्गत माना है।

निषाद पर्वत का अल्टाई पर्वत से उत्तर में इलावृत्त वर्ष मिलता है। इलावृत्त को नेमेरु तथा दो अन्य छोटी पर्वत श्रृंखलायें चार देशों में विभक्त करती हैं। प्रसिद्ध गंगमादन एवं माल्यवन यही पर स्थित बताये गये हैं। इस विवरण से पता चलता है कि अल्टाई, हिमालय तथा कराकोरम या कैलाश पर्वत श्रृंखलायें निषाद पर्वत के अन्तर्गत आते थे। इससे ज्ञात होता है कि निषाद पर्वत श्रृंखलायें पृथ्वी के एक विशाल भू-भाग पर फैली हुई थीं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि मानव का सर्वप्रथम आवास इन्हीं निषाद पर्वत पर बसा हुआ वास्तविक रूप से निषाद का " बैठ जा " शब्द इन उतुंग चोटियों को आवास के लिये प्रयोग किये जाने के कारण हुआ होगा। धीरे-धीरे यही बैठने या बैठाने वालों के लिये प्रयुक्त होने लगा है। यह भी संभावना व्यक्त की जाती है कि निषाद पर्वत श्रेणियों पर रहने वाले लोग ही आगे चलकर निषाद नाम से विख्यात हुये।

महाभारत में एक स्थान पर सरस्वती नदी का वर्णन आया है। सरस्वती के तट पर विद्वानों का निवास था। वहीं पर यह कहना निषादों के संसर्ग दोष से बचने के लिये सरस्वती विलुप्त हो गई सच्चाई यह है कि सरस्वती का बहाव ही अपने उद्गम स्थान से अन्य धार में विलय हो जाने के कारण बन्द हो गया था और यह नदियों की स्वाभाविक प्रक्रिया के अन्तर्गत संभाव्य है। निषाद सम्पूर्ण भारत में फैले हुये थे। उनमें से विकसित अनेक वर्ण धीरे-धीरे बंटते रहे। यह एक-एक करके अपनी श्रेष्ठता के लिये एक दूसरे से दूर होते रहे। अपने नवीन वर्ण, नवीन जाति तथा नवीन कुल धारण करके अलग- अलग पहचान बनाने में लगे रहे और आज वे इस स्थिति में पहुँच चुके हैं कि वे स्वयं को नहीं पहचान पा रहे हैं। युगों पूर्व से अपने पितामह निषाद को नहीं पहचान पाना उन्हें कठिन सा प्रतीत हो रहा है। आर्य संस्कृति ब्रह्माजी को आदि पिता मानती है। ब्रह्माजी के पुत्र निषाद, आर्य जगत के 'पितामह' हैं। कर्म के आधार पर श्रेष्ठ लोगों में राक्षस, वानर, असुर, दैत्य, दानव, नाग, निषाद, कार्य जगत के पितामह हैं । कर्म के आधार पर श्रेष्ठ लोगों में राक्षस, दानव, असुर, दैत्य, दानव, नाग, निषाद, शल्य, यास, पुलिंवा, किन्नर, गन्धर्व, शक, धवन, कम्बोज पार्दस तथा पहलव आदि जातियों के नाम मिलते हैं। ये सब मनु की संतान मानव से इतर आर्य जातियाँ मानी गयी हैं। निषादों, दासों, दस्युओं, पुलिन्दों तथा किरातों को संस्कृति की प्रारम्भिक काल की जातियाँ माना गया है। इन सभी जातियों को पर्वत निवासी या नदी तटवासी बताया गया है। निषादों को वत्स भूमि का निवासी तथा इलाहाबाद से सुदूर पूर्व तक का निवासी कहा गया है। निषादों के रहन-सहन शरीर रचना एवं उनके पिछड़ेपन का कारण वहाँ की जलवायु तथा परिस्थितियाँ हैं।

निषाद शब्द का अर्थ एवं व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति - के बाद नेसाद - निस्साद - निखाद - निषाद। संस्कृत-निषिद। पाली-निषाद। प्राकृत-निषाद। अवभ्रंश-निसाद। हिन्दी-निषाद।

निषाद शब्द विभिन्न कालों में उपर्युक्त प्रकार से प्रयुक्त हुआ। भाषा विज्ञान का आधार उच्चारण पर आधारित है। नौका चालकों की 'हइयां हो', कामगारों के कण्ठ के निकले 'स्वर' अक्षर बन गये।

निषाद शब्द व्याकरण के आधार पर पुर्लिंग संज्ञा है, परन्तु माकण्डेय पुराण में निषिधावती एक नदी का वर्णन आया है जो कि विध्याचल से निकली है। निषाद शब्द का प्रयोग निषद, निषघन, निषधा, निषधाधिपति, निषाधावती, निषघाश्च, निषादकर्ण तथा निषाद वंश कर्ता आदि के लिये विभिन्न स्थलों पर हुआ है। निषाद शब्द की व्युत्पत्ति संगीत शास्त्र के अन्तर्गत हाथी के चिंघाड़ से मानी गई है। स, रे, ग, म, प, ध, नी सप्त स्वरों का षड़ज, ऋषम, गंधर्व, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाधा से ध्वनित माना गया है। निषाद शब्द वेदों की अनेक ऋचाओं में प्रयुक्त हुआ है। विद्वानों ने निषाद शब्द का सम्बन्ध प्राचीनकाल में सर्वाधिक सुसंस्कृति, सशक्त, बहुसंख्य एवं वैभवशाली समुदाय से माना है। लेकिन समय के साथ-साथ काल परिवर्तन में इसे जाति, व्यक्ति, नदी, पर्वत, देश, स्वर, स्त्री तथा पुरुष के लिये किया जाने लगा है। संस्कृत में निषाद शब्द का प्रयोग उसकी श्रेष्ठता के लिये किया गया है।

'पंचम निषादः ' शब्द के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद हैं। आचार्य किशोरीलाल बाजपेई ने लिखा है ‘‘निषादों में वर्ण व्यवस्था नहीं थी। सभी निषाद एक इकाई के रूप में थे और अब भी हैं। निषादों में अब भी चातुर्वण्य जैसी कोई चीज नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि चातुर्वण्य उस समय के उपरान्त प्रयुक्त हुआ, जब वर्ण व्यवस्था स्थापित हुई थी।

निषाद का मूल अर्थ 'यज्ञ की दीक्षा' होता है। 'निषक्त शब्द जनक, पिता, बाप व निषदन शब्द गृह के लिये (घर के लिये) प्रयुक्त किया जाता था । निषधा शब्द हाट, छोटी खटिया के लिये प्रयुक्त होता था। 'निषादित' शब्द बैठाने के लिये प्रयोग किया जाता था। 'निषादों' शब्द हाथी पर बैठा हुआ के लिये प्रयोग होता था । (पुस्तक - निषादों का इतिहास, पृष्ठ 43)

निषाद - हिय, जीव, जनो, पंजनाः, निषीद, नेसाद, निस्साद इत्यादि निषेध, निषद, निषाद । व्युत्पत्ति से निषाद शब्द का विकास तथा उसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है। निषाद - संस्कृति की सुदृढ़ भाषा एवं गणना रीति आज भी विश्व के अनेक भागों में प्रचलित है। 'निषाद' पंचांग जो चन्द्रमा की कलाओं पर आधारित है, पूर्वी द्वीप समूह में अपनाया हुआ है। निषाद भाषा के अनेक शब्द तो विश्व भर की भाषाओं के अंग बन चुके हैं। निषाद गणना रीति की बराबरी आज का विज्ञान भी नहीं कर पा रहा है। दशमलव पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय गणित निषाद की 'कुड़ि' या 'कौड़ी' जो बीस के अंक पर आधारित है, गणना पद्धति की बराबरी नहीं कर पा रही है। सम्पूर्ण लेखा-जोखा मुड़िया लिपि में लिखा जाता रहा है । पाँच कुड़ि से सौ की गणना, दस-दस की दाशमिक प्रणाली से अधिक सरल तथा भूल, कम से कम संभावना वाली गणना थी।

नावों के मस्तूलों पर चिन्हों का अंकन तथा सजावट के लिये की गयी चित्रकारी, धीरे-धीरे लिपि बनकर एक सशक्त भाषा का रूप ग्रहण कर नयी 'मूँज' नामक झाड़ के बने रस्से, कर्तव्य बोध के प्रतीक बनकर, 'जनेऊ ' तथा भुर्ज पत्र पर सांकेतिक भाषा में लिखे गये संदेश, मंत्र बनकर, साहित्य सृजना के प्रेरणा सूत्र बने । बोली से भाषा और भाषा से विभिन्न कालों में विभिन्न भाषाओं का नाम धारण करती निषाद भाषा वर्तमान हिन्दी भाषा तक आते-आते अपना स्वरूप बदलती रही है।

निषादों की जातियाँ तथा उपजातियाँ

अतीत में श्रेष्ठ महर्षि कश्यप से सम्बन्धित अनेक राजवंशों के उत्तराधिकारी, समाज में पंचों की हैसियत रखने वाले, पराक्रमी शूरवीर, रण-बाँकुरे धनुर्धर निषादों का समाज, कालगति से, अब अखिल भारतीय स्तर पर अनेक जातियों और उपजातियों में विखण्डित दिखाई देता है। जिन्हें प्रकृति ने रूप-रंग, आकार, शरीर रचना आदि की दृष्टि से तो एक बनाये रखा है किन्तु अपनी आजीविका, धन-सम्पत्ति, सामाजिक मान्यता आदि की दृष्टि से इतना अलग कर दिया है कि उन्हें अपने-अपने ही प्रतीत नहीं होते। अपने लगते हैं तो ऊँच-नीच, सम्पन्न-विपन्न के भेद के कारण परस्पर हिल-मिल कर नहीं रहना चाहते हैं। असंगठित हैं किन्तु जनसंख्या इनकी इतनी है कि यह बहुसंख्यक समाज है किन्तु विखण्डित अवस्था में पिछड़ा समाज बनकर रह गया है। यहीं इनकी दुर्दशा का कारण है। सम्प्रति देश में निषादों की परिधि में आने वाली निम्नांकित जातियाँ व उपजातियाँ, देश भर में निवास करती हैं जिनकी संख्या 250 है :-

1. निषाद	2. मल्लाह	3. चित्त पावन ब्रह्म
4. माहौर	5. मल्हार	6. महरा
7. मेहरोत्रा	8. मल्होत्रा	9. बुढ़ने
10. गुड़िय	11. गौड़	12. खैरवाल (खरवार)

13. रावत	14. रावल	15. तुराहा
16. तुआर	17. तंवर	18. तोमर
19. तौराह	20. गौड़िये	21. तुरेहा
22. धीवर	23. धुरिया	24. केवर्त
25. शवर	26. गिलहोठ	27. कहार
28. मीना	29. दास	30. चाय
31. काछी	32. कोली	33. रैकवार
34. पालकीवाल	35. कोल	36. रत्तड़ा
37. बन्डोत्रा	38. नाढ़ला	39. थाड़वाल
40. जेफ	41. डोववाल	42. सींहरा
43. गोठवाल	44. सिघड़	45. वफलावत
46. अध्ययन करें	47. बरवाल	48. माण्डया
49. सत्तावन	50. देवड़वाल	51. महर
52. खोड़ा	53. चिरावड़या	54. गुणावत
55. प्रिंट करें	56. चंद्रमा	57. भूगोड़ा
58. गोमलाडू	59. सूसावत	60. बैनाड़ा
61. वामनावत	62. दूसरा	63. मांछड़
64. सुंदरणा	65. वेवरिया	66. साँवल
67. बांसखोआ	68. सीकरवाल	69. अविद
70. कोड़ात	71. सम्मन	72. देड़वाल

73. कटारिया	74. सेदवाद	75. कड़ाववाल
76. हांडी	77. पीन्डवाल	78. बाथम
79. कालू वंशी	80. जांजम	81. खुटेल
82. खटूलाह	83. राज गौड़	84. धुरिया रावन वंशी
85. अन्तत (चावड़)	86. गाछेह	87. कछवाहे
88. फूलेरिया	89. खत्री	90. टैंकलेड़ा
91. फरहा	92. भरिगा	93. रज-भर
94. डगमगाना	95. मुड़ाहा	96. पनाका
97. दुलिया	98. सैनी	99. माँझी
100. बिन्द	101. भील	102. गोढ़ीख
103. नोनियाँ	104. सोरहिया	105. बनपर (बनाफर)
106. मुरियार	107. पर्वतिया	108. महिषी
109. गंगौता	110. बुटौला	111. जयवर
112. भोई गौड	113. माण्डला	114. टंडन
115. बम्बोत्तरा	116. भरगौत्र	117. चालुक्य
118. द्वितीय घरुक	119. नरवरिया	120. नोरिया
121. सुंघिया	122. भोर	123. वरमियां
124. मोर	125. मेर	126. मौर्य (खरमौर्या)
127. तक्षक	128. पेंच	129. एक साथ
130. मीनहास	131. माल	132. दाहरिया

Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com/ Vol.03, No.1, August, 2024

133. बठौर	134. जाहिया	135. बल
136. मुक्कीमार	137. पृथ्वीहार	138. भरयोरा
139. खौकर	140. पविया	141. रूहेला
142. बाहरिया	143. मनज	144. पनवार
145. लोध (लोधी)	146. पनवर	147. त्वार
148. जंजुबा	149. मेंड	150. अन्तर धनियाल
151. अन्तर धानियाल	152. खंगर	153. लॉन
154. मोहिस	155. सत्य	156. चकते
157. पहाड़ियाँ	158. सखरिया	159. मनोत
160. लगाँहू	161. भलोत्रे	162. राघन
163. पठानिया	164. लोहल	165. लहड़ाई
166. सांडिल्य	167. बछेरा	168. जखोड़ा
169. मकड़े	170. कोड़े	171. अखेराज
172. कपूर	173. रागढ़	174. चूंदरा
175. सेंगरखाल	176. मलियान	177. औदियान
178. ललौतरे	179. लकरिया	180. गहरे
181. पंड़ोर	182. लचौरे	183. गवाने
184. बल्ला	185. आप	186. भडोरे
187. कुन्डरिया	188. मुंडरिया	189. पुनिया
190. इंदरेख	191. इन्दौरिया	192. परा

193. परैया	194. कचैरा	195. कचैरिया
196. कचुरिया	197. पाड़ौलिया	198. जत्थाय
199. केशनिया	200. बावनिया	201. सिंहनाथ
202. चाहू मान	203. कढ़कियाग	204. सालमीयां
205. रसलभर	206. वोरखड्या	207. पीजनिया
208. नौड़यि	209. मोरी	210. चतुरमुज
211. रवानी	212. गंगोले	213. लचौरे
214. लहरे	215. रिन्छेया	216. मेरप्या
217. लूअ	218. पीन्डवाल	219. नूरिया
220. नशाद	221. मांछी	222. कोल बोल
223. तरज	224. जालु	225. मालू
226. मटियारी	227. भीड़	228. गुहाटी
229. सुरिया	230. तीयार	231. प्रभातिया
232. खैरदार	233. करार	234. झावा
235. करड़ा	236. झराड़	237. धमूर
238. भावा (उड़ीसा में)	239. माड़ी	240. कुलौ
241. मूली	242. पाँदी	243. सगघिया
244. चोटी	245. नापर	246. भंवर
247. डैन	248. गोड़ामोड	249. गोदड़ी
250. जोग	251. अगरवाल	252. खरमौर्या

253. खरवार	254. मगरट्टा	255. व्यालिया
256. टयोंगहा	257. धामपुरिया	258. डियौलहा अग्रवाल
259. तीखर	260. चौहान चाई	

'ऋग्वेद' शब्द की रचना में 'पंचजनः मम होत्र-जुषाध्वम्' का वर्णन है। यास्क मुनि ने अपने 'निरुक्त' में 'पंचजनः' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है। 'चत्वरो वर्णः पंचमो निषादः' चारों वर्ण और पांचवां निषद यास्क- 'ऋग्वेद 5.63.17 'दुर्गा' इससे सहमत हैं। उप मान्यव का मानना है कि 'गंधर्व, पितर, देवता, असुर, चार वर्ण और पांचवां निषाद' वायु पुराण में, विभिन्न उदाहरणों में निशादों का वर्णन किया गया है। डॉ सुनीति कुमार चटर्जी की मान्यता है- 'निषाद जाति के लोग भारत के आधुनिक मानव की एक जड़ है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. निषादों का इतिहास - नन्दराम निषाद
2. धीवर जाति प्रकाश बाबा बाथमदास सैलानी
3. हिन्दू सभ्यता डा० बालमुकुन्द मुकर्जी
4. निषाद सभ्यता - राधेश्याम
5. राजपूताने का इतिहास - कर्नल टाड
6. जाति भास्कर - पं० ज्वाला प्रसाद
7. प्राचीन मय सभ्यता के०एस० केन सरन
8. ऋग्वेद
9. बाल्मीकि रामायण महर्षि बाल्मीकि
10. महाभारत महर्षि वेदव्यास
11. श्रीमद्भागवदगीता
12. मत्स्य पुराण

Corresponding Author: Dr. Abhishek Tripathi
E-mail: dineshchandra715@gmail.com
Received 7August 2024; Accepted 24 August 2024. Available online: 30 August, 2024
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License